© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

मैथिली भाषा उद्भव और विकास

डॉ0 गरिमा
एम.ए., पीएच.डी. (इतिहास)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर (बिहार)

मिथिला पकवान, माछ, पान और मधुर–मुस्कान की भूमि के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ की भाषा मैथिली है। मैथिली अपने माधुर्य के लिए विख्यात है। इसमें संदेह नहीं कि मिथिला संस्कृत साहित्य का एक मान्य गढ़ रहा है, पर मिथिलावासियों में हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्यान्य भाषाओं के प्रति भी अनुराग रहा है। अंग्रेजी और हिन्दी के अनेक विद्वान इस क्षेत्र की देन है। मिथिला के पुत्रों में अद्भूत बौद्धिक प्रखरता रही है। यह प्रखरता जीवन के विभिन्न आयामों में प्रदर्शित होती रही है। इसके कायल अन्य क्षेत्रों के नागरिक जन भी है। जिस क्षेत्र के वरद् पुत्रों की प्रतिभा बहुआयामी हो, उनकी अपनी भाषा मैथिली में न हो संभव नहीं है। मैथिली दरभंगा, मधुबनी तथा नेपाल की तराई के कुछ भागों में आमजन की भाषा है लेकिन इसका विस्तार उत्तरी बिहार के एक विस्तृत क्षेत्र तक है। सहरसा, पूर्णिया, मुंगेर आदि क्षेत्रों की भाषा मैथिली है। हाँ इनके उच्चारण या शब्द खण्डों पर बल में अंतर दिखाई देता है। इसके बावजूद भाषा का मूल स्वरूप मैथिली ही है।

मैथिली भाषा के उद्भव और विकास पर आधुनिक काल में अनेक मान्य रचनाएँ प्रकाशित हुई है। इन सबों में आर.आर. चौधरी की पुस्तक 'ए सर्वे ऑफ मैथिल लीटरेचर' एक प्रामाणिक श्रोत माना गया है। इसके

अतिरिक्त दो खण्डों में जे.के. मिश्रा रचित 'हिस्ट्री ऑफ मैथिली लीटरेचर' भी काफी तथ्य उपस्थित करते है। हाँ दोनों पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है, पर इसकी सूचना सामग्री काफी विस्तृत है। ये दोनों पुस्तके मैथिली साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ–साथ इनके विकास की वर्तमान स्थिति पर काफी प्रकाश डालते है। इन पुस्तकों पर टिप्पणी करते हुए मिथिला के इतिहास के लब्ध प्रतिष्ठित जानकर एवं लेखक डॉ0 उपेन्द्र ठाकुर ने इस प्रकार की है– 'The attention of the specialists in their respective branches to fill up the gap still further inquiry and proper research".

मैथिली में जीवंतता और अनवरतता का योग है। मैथिल बिहार की लोकभाषा या बोलियों में अध्ययन के क्रम में जार्ज ग्रियर्सन ने इस भाषा की महत्ता को ढूँढ़ा और प्रबुद्ध जनों के सामने रखा। उनकी धारणा है कि यह इंडी इरनियन परिवार की भाषा है। कुछ विद्वानों का मत है कि मैथिली भाषा एवं लिपि पर बंगाली का गहरा असर है। यह सर्वविदित है कि बंगाली, असीम, उड़िया आदि संस्कृत भाषा से पनपी है। मैथिली भी इसका अपवाद नहीं है। फर्क सिर्फ इतना है कि मिथिला के संस्कृत विद्वानों ने अपनी मातृभाषा के उत्कृष्ट रचनाएँ की। उड़िया तथा नेपाली भाषा का भी प्रभाव इस पर देखा जा सकता है। माना जाता है कि ज्योतिश्वर ठाकुर एवं विद्यापति पूर्वी भारत के महानतम् काव्य रचयिता थे।

प्रश्न उठता है कि मैथिल भाषा उद्भव कब हुआ ? इतिहासकार आर. के. चौधरी का मानना है कि दसवी–ग्यारहवीं सदी में मैथिली का उद्भव हुआ। डॉ0 चौधरी ने यह भी बताया है कि मैथिली मगधी–प्राकृत से नवीं शताब्दी में अलग हुआ। उनका मानना है कि मैथिली लिपि सातवी–आठवी शताब्दी के मध्य अस्तित्व में आया। ध्यान देने की बात है कि मैथिली लिपि एवं बंगाली लिपि में बहुत साम्य है। बंगाली विद्वान इस भाषा को गौदिया या मिश्रित बंगाली बताया है। इस बंगाली का अपभ्रंश भी हम कह सकते हैं।

आधुनिक बंगाली की लिपि देवनागरी है। डॉ0 रामप्रकाश शर्मा ने भी मैथिली के विकास की सबसे अच्छी अवधि 1206 से 1526 ई0 बताया है। इसी काल में ज्योतिश्वर और विद्यापति पैदा हुए थे जिनकी रचनायें आज भी अपनी प्रतिष्ठा बनाए हुए है। ध्यान दिलाना चाहेंगे कि संस्कृत साहित्य के वाक्य विन्यास, उपमा–उपमेय, अलंकार आदि से प्रभावित हो। जनवाणी के उतारने के क्रम में इस भाषा का विकास हुआ। डी0 सी0 सरकार के अनुसार बंगाली–मैथिली लिपि का उल्लेख अनेक बार किया। उनके अनुसार बंगाली लिपि का मैथिली पर प्रभाव पड़ा। 'Some Epigraphical Records of the medieval period from Eastern 2nd page 43-44' कुछ विद्वानों का मत है कि मैथिली लिपि गुप्तकाल के ब्राह्मी का एक रूप है।

मैथिली साहित्यकारों की सूची बड़ी लंबी है, पर कतिपय साहित्यिक कृतियों ने इस भाषा के मान–सम्मान को एक नया आयाम दिया। इसमें चंदा झा, गोनू झा, तथा आधुनिक मैथिली भाषा के सम्बर्द्धक डॉ0 गंगा नाथ झा, डॉ0 अमरनाथ झा, डॉ0 उमेश मिश्रा, डॉ0 सुभद्र झा, पंडित इशनाथ झा, पंडित हरिमोहन झा, डॉ0 सुरेन्द्र झा 'सुमन' आदि का नाम सम्मान से लिया जाता है। डॉ0 उपेन्द्र ठाकुर की धारणा है कि मैथिली के जन्म और विकास के काल को लेकर विवाद व्यर्थ है पर मध्यकाल में मैथिली अपनी पहचान बना चुका था। इतना ही नहीं उनके शब्दों में "No undue credence need to be given to the much talked Baudha-ga na doha or carya carya viniscaya or caryapadas or Doha Kosa which are usually claimed by Maithili to form scientific base for origin of their language."

कुछ भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार मुजफ्फरपुर जिले के कटरा से प्राप्त ताम्रयम पर लिखि लिपि, महिपाल के समय की नवलागढ़ एवं वनगॉव से प्राप्त अभिलेख आदि के आधार पर यह भी प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि मैथिली लिपि बंगाली भाषा की देन है। इस संबंध में विद्वानों की यह धारणा है कि प्रारंभिक मैथिली यथा धीर्तिलता,

कीर्तिपताका आदि में अपभ्रंशों की भरमार है। यों मगधी प्राकृत, बंगाली, उड़िया आदि के प्रभाव की बात पहले बताया जा चुका है।

विद्वान इतिहासकार और लेखक आर.के. चौधरी ने मैथिली लिपि के पुरातात्विक एवं साहित्यिक पक्षों को उजागर करने की दिशा में प्रशंसनीय काम किये है। मिथिलाक्षर या तिरहुता जैसे पद उनकी देन है।

मैथिली साहित्य के विकास को कर्णाट वंशीय एवं ओईनवारवंशीय राजाओं के काल में अधिक गति मिली। पिछले अध्याय में हम यह बता चुके है कि मिथिला में अनेक श्रेष्ट कोटि के संस्कृत के विद्वान पैदा हुए। कर्णाट एवं ओईनवार राज–कुलों के काल में ही गंगेश, पद्पनाभ, वीरेश्वर, चंण्डेश्वर, विद्यापति, वाचस्पति, पक्षधर, शंकर आदि संस्कृत के मनीषियों का प्रादुर्भाव हुआ। इनकी प्रतिभा से मैथिली भी प्रतिभावान हुई।

मैथिली साहित्य को समृद्ध करनेवाले दूसरे प्रतिभा संपन्न मार्तण्ड विद्यापति ठाकुर थे। अन्य भाषाओं के भी विद्वान इनकी प्रतिभा का सहसम्मान मान्यता देते है। इनका काल 1350 ई0 से 1450 ई0 बताया जाता है। यद्यपि विद्यापति को सामान्यतः उनकी पद्ावली के लिए याद किया जाता है। पर गद्य लेखन भी उनकी अतिमहत्वपूर्ण है। उनके वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक काव्य मैथिली में है। इसका रूप अवहट्ट या अवहत्थ (अपभ्रंश) है। कीर्तिलता एवं कीर्तिपताका की भाषा भी अवहट्ट है।

इसे देशी वैना भी कहकर संबोधित किया गया है। ज्ञात हो कि विद्यापति की प्रथम कृति 'कीर्तिलता' थी जो समकालीन ऐतिहासिक थीम से जुड़ी है। कीर्तिलता मुख्यता काव्य रूप में है। पर यत्र–तत्र गद्य का भी प्रयोग है। मध्यकालीन जीवन का यथार्थ चित्रण इस पुस्तक में है। साथ ही महिलाओं का प्रत्यक्ष एवं प्रभावपूर्ण शब्द चित्र भी इस पुस्तक में है।

दरभंगा राजपरिवार के संरक्षण में मैथिली भाषा का प्रचार–प्रसार होता रहा। पर 1860 ई0 के बाद उर्दू–अंग्रेजी आदि की बोलचाल में प्रतिष्ठा बढ़ गई। दरभंगा राज स्कूल की स्थापना 1888 ई0 में हुई। जहाँ अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी, उर्दू आदि की शिक्षा प्रारंभ हुई। इसका प्रभाव निश्चित रूप से मैथिली के विकास पर पड़ा। पर प्रतिकूल स्थिति में भी मैथिली जन–जन की भाषा इस क्षेत्र में बनी रहीं। मैथिली के विकास और उसकी समझ के लिए तत्कालीन मधुबनी के एस.डी.ओ. ग्रीयर्सन ने भी अहम् योगदान दिया। ग्रीयर्सन ने 1882 ई0 में मैथिली क्रेस्टोमैथी एवं ट्वेन्टी वन वैष्णव हीम्स की रचना 1884 ई0 में की। इसके द्वारा अंग्रेजी के विद्वान भी मैथिली साहित्य की गरिमा को जान पाये।

मैथिली साहित्य के सामाजिक पहलुओं पर अनेक रचनाएँ प्रसिद्ध हुई। गल्प, उपन्यास, विनोदात्मक एवं अन्य कोटि की रचना इन प्रसंगों को छूती हुई प्रकाशित हुई। हमारी यही चर्चा अधूरी रहेगी। यदि पंडित परमेश्वर झा द्वारा रचित 'अगिलही' तथा योगानंद झा की रचना 'भलामानुष' का उल्लेख न करें। व्यंग्यात्मक लेखन का अतुलनीय स्तम्भ प्राफेसर हरिमोहन झा थे। खट्टर का के तरंग उनकी उल्लेखनीय रचना है। अन्यान्य मैथिली साहित्यकारों की सूची बड़ी लंबी है। इनमें पंडित जीवछ मिश्र, पंडित शशिनाथ चौधरी, पंडित उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' आदि का उल्लेखनीय योगदान रहा है। मैथिली साहित्य में आलोचनात्मक साहित्य सर्जना भी हुई। इसमें कुमार गंगानंद सिंह, डॉ0 उमेश मिश्र, नरेन्द्र दास, भोला लाल दास आदि ख्याति प्राप्त है।

यहाँ यह उल्लेख आवश्यक है कि हमारा आलेख मुख्य रूप से मुगलकालीन राजनैतिक–सामाजिक स्थिति से जुड़ा है, पर इस काल में तथा पश्चात में मैथिली के विकास को नजरअंदाज करना अनुचित होगा।

आज भी मैथिली साहित्य की सर्जना हो रही है। नये–नये साहित्यकार अपनी पहचान बना रहे है।

संदर्भ सूची :

आर.आर. चौधरी–ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर.

हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, दो खंड, जे.के. मिश्रा.

एसपेक्ट्स ऑफ सोसाइटी एंड इकोनॉमी, ऑफ मेडिवल इंडिया, जानकी प्रकाशन, 1889, पेज–80, डॉ0 उपेन्द्र ठाकुर.

वही, पृष्ठ 41.

मिथिला का इतिहास–डॉ0 रामप्रकाश शर्मा, पृष्ठ 538.

सम एपियाग्राफिकल रेकार्डस ऑफ द मेडिवल परियिड फरौम इस्ट इंडिया, पृष्ठ 43–44, डी.डी. सरकार.

ए सर्वे ऑफ मिथिला लिटरेचर–आर.के. चौधरी, पृष्ठ 26.

सुकुमार सेन इंडियन लियूस्टीकस.

शुभद्र झा, ए.वी.ओ.आर.आई. 11 पृष्ठ 106, 126,1940.

जर्नल ऑफ बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, वाल्यूम 13–3–4, पृष्ठ 298.